ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

महर्षि दयानन्द सरस्वती 200वीं जयन्ती 1824-2024 सदैव सत्य

वर्ष 46 | अंक 42 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 200 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 02 अक्टूबर, 2023 से रविवार 08 अक्टूबर, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2080 | सृष्टि सम्वत् 1960853124
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh

जातिगत जनगणना भारत की उन्नति में एक बड़ा अवरोध

जातिवाद के संपोषक इस कुचक्र की निंदा और रोक की मांग करता है- आर्य समाज

आर्य समाज द्वारा नाम के साथ आर्य लिखने का आंदोलन केवल जातिवाद के विष को समाप्त करने के लिए ही था

जातिगत गणना कहीं समाज के भयंकर विघटन का कारण न बन जाए?

अगर जातिगत संख्या ही लेनी थी तो केवल हिंदुओं की ही क्यों?

मुस्लिम समाज में भी अनेक जातियां हैं, उनकी अलग अलग,जातियों की गिनती सार्वजनिक क्यों नहीं?

आज भारत राष्ट्र अपनी अपार सफलताओं के साथ उन्नति और प्रगति के पथ पर गतिशील है। हमारे वैज्ञानिकों की कड़ी मेहनत और पूर्ण निष्ठा के कारण हमने मंगल ग्रह पर तिरंगा लहराया और चंद्रमा पर भी ऐतिहासिक कीर्तिमान स्थापित कर यह सिद्ध कर दिया कि आज का भारत एक नया भारत है और इस क्रम में हम सूर्य पर भी तिरंगा फहराने के लिए पूरी शक्ति के आगे बढ़ रहे हैं। आज भारत विश्व की पांचवीं अर्थव्यवस्था की सूची में सम्मिलित होने का गौरव प्राप्त कर चुका है। जबकि भविष्य में विश्व की तीसरी अर्थ व्यवस्था बनने का संकल्प भी सुनाई दे रहा है। हमारे राष्ट्र की सीमाओं पर भी भारत माता के वीर सपूत अपनी जान की परवाह किए बिना समर्पित भाव से सुरक्षा का दाईत्व निभा रहे हैं। इस तरह भारत जल, थल और नभ में अपने राष्ट्र की आन, बान और शान को न केवल सुरक्षित रख रहा है, बल्कि नित नए कीर्तिमान स्थापित करके पूरे विश्व को आइना यह दिखा रहा है कि भारत पुनः विश्वगुरु बनने के मार्ग पर अग्रसर है।

इस सबके बावजूद जब इक्कीसवीं शताब्दी के नये भारत में संपूर्ण विश्व हमारी ओर अपेक्षा भरी दृष्टि से देख रहा है, हमारी प्राचीन वैदिक संस्कृति और सभ्यता से प्रभावित हो रहा है, हमारे मानवीय मूल्य और आदर्शों का अनुकरण रहा है, तब हमारे देश के कुछ स्वार्थी नेता जातिवाद के राक्षस को पुनः जीवित करके भारत की एकता, अखंडता और संप्रभुता के साथ खिलवाड़ करने का कुत्सित प्रयास कर रहे हैं। जो किसी भी रूप में राष्ट्र हित में नहीं है।

यह सब भली-भांति जानते हैं कि हमारे देश में जातिवाद, छुआछूत और ऊंच-नीच का बहुत अधिक बोल बाला था। यहां तथाकथित अपने आप को ऊंची जाति का मानने वाली कुछ जातियों के लोगों ने समाज के बड़े और महत्वपूर्ण हिस्से का जीना मुश्किल किया हुआ था। वे लोग जो सच्चे अर्थों में राष्ट्रभक्त थे, भारतीय वैदिक धर्म, संस्कृति और सभ्यता तथा संस्कारों को अपनाना चाहते थे, देश की उन्नति, प्रगति, विकास और सुरक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करना चाहते थे उनको हमेशा तिरस्कृत और अपमानित किया जाता रहा। उनको पानी जैसी मूलभूत जरूरत के लिए तड़पाया गया, हिंदुओं के कुंए से मुसलमान तो पानी भर सकते थे लेकिन हिंदू भाईयों की बाल्टी यह कहकर फेंक दी जाती थी कि तुम अगर यहां से पानी भरोगे तो हमारा धर्म भ्रष्ट हो जाएगा, उन लोगों को कभी मंदिरों में नहीं घुसने

- शेष पृष्ठ 7 पर

"महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने जातिवाद, छुआछूत और भेदभाव की दीवार को तर्क, युक्ति और प्रमाण के प्रहार से तोड़ा, वैदिक आधार पर सब मनुष्य एक ईश्वर की संतान हैं, का उद्घोष किया। सबका एक ही वैदिक धर्म है, का संदेश दिया, कोई ऊंचा और नीचा नहीं, गुण, कर्म स्वभाव के अनुसार चार वर्ण और चार आश्रम की व्यवस्था से मानव समाज को परिचित कराया। सबको जीवन जीने की आदर्श कला सिखाई। मानव मात्र के कल्याण हेतु आर्य समाज की स्थापना की और महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रेरणा से आर्य समाज लगातार जातिवाद और ऊंच-नीच, भेदभाव के खिलाफ कार्य करता आ रहा है। हमारे महापुरुषों ने इसके लिए अभियान चलाए, तथाकथित निम्न समझे जाने वाले समाज के लिए पानी के कुएं खुदवाए, उनके बच्चों के विवाह पर उन्हें घोड़ी पर बैठाया, जो लोग मजबूरी में मुस्लिम और ईसाई बन गए थे उनकी घर वापसी कराई। सबको यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा, साधना से जोड़कर अपने साथ, अपने पास बैठाया और उन्हें गले से लगाया। वह महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा स्थापित आर्य समाज ही है जिसने जातिवाद की दीवार को तोड़कर अंतर्जातीय विवाह का कानून बनवाया। लड़के लड़की के विवाह की आयु 18 और 21 निर्धारित करवाई। पूरे समाज के बिगड़े हुए ढांचे को सही मार्ग दिखाकर आधुनिक भारत के नव निर्माण में अहम भूमिका निभाई और लगातार अपना श्रेष्ठ योगदान दे रहा है। लेकिन बिहार राज्य सरकार द्वारा ये जातिवाद की संपोषक जातिगत जनगणना का आर्य समाज घोर विरोध और निंदा करता है। यह किसी भी तरह से भारत राष्ट्र को कमजोर करने की स्वार्थ पूर्ण सोच की चिंगारी है। इसके लिए हम केंद्र सरकार, बिहार राज्य सरकार और न्यायालय से भी मांग करते हैं कि इस जातिवाद के संपोषक कुचक्र को यहीं पर रोका जाए। क्योंकि यह मानव विरोधी और राष्ट्र विरोधी संकल्पना है, जो किसी भी तरह से स्वीकार्य नहीं है।"

भारतीय रेलवे स्टेशनों पर निरंतर बढ़ रहा वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार

प्रथम चरण में कुल 10 स्टेशनों पर निर्मित होंगे वैदिक साहित्य के स्टाल- आर्यजन सहयोग दें

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर आर्य समाज के इतिहास में पहली बार रेलवे स्टेशनों के माध्यम से महर्षि की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने के प्रयास में सभी आर्य परिवार, आर्य संस्थाएं अवश्य सहयोग दें।

एक स्टाल के निर्माण का व्यय 1,50,000 रुपये मात्र

अतः सभी आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं, आर्य प्रतिष्ठानों और आर्य परिवारों से निवेदन है की वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार में दिल खोलकर सहयोग देंवे, महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने में अपनी ओर से तथा अपने परिजनों के नाम से अथवा अपनी संस्था की ओर अवश्य योगदान देकर महर्षि के उदघोष **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** को सफल बनाने हेतु आगे आएं।

-सभा महामंत्री

वैदिक साहित्य के प्रचार हेतु कृपया अपनी दान राशि सीधे निम्नांकित बैंक खाते में भी जमा करायें-

Delhi Arya Pratinidhi Sabha-Vedic Prakashan
A/c No : 910010009140900
IFSC CODE : UTIB0002193 Axis Bank Connaught Place

कृपया दानदाता अपना आनलाइन सहयोग देकर व्हाटसऐप नं. पर 9540040388 सूचित अवश्य करें।

वेदवाणी-संस्कृत

हे वरुण! हमें अनृत=असत्य से मुक्त करो

बह्वꣳदं राजन् वरुणानृतमाह पूरुषः।
तस्मात् सहस्त्रवीर्य मुञ्च नः पर्यंहसः॥
-अथर्व० 19 । 44 । 8
ऋषिः-भृगुः॥ देवता-वरुणः॥ छन्दः-अनुष्टुप्॥

शब्दार्थ- **वरुण**=है पापनिवारक! **राजन्**=हे सच्चे राजा! **पुरुषः**=मनुष्य **इदम्**=यह [तुच्छ-तुच्छ] **बहु**=बहुत **अनृतम्**=झूठ **आह**=बोलता है। **तस्मात्**=उस **अंहसः**=पाप से, **सहस्त्रवीर्य**=हे अपरिमित वीर्यवाले! तू **नः**=हमें **परिमुंच**=सब ओर से मुक्त कर दे।

विनय- हे सच्चे राजा, हे पापनिवारक! मनुष्य बहुत अनृत बोला करता है और बड़ी तुच्छ-तुच्छ बातों पर अनृत बोला करता है। प्रातः से लेकर रात्रि तक एक दिन में ही न जाने कितनी बार असत्य भाषण करता है। हम मनुष्यों का जीवन इतना अनृतमय हो गया है कि प्रायः हम लोग यह अनुभव ही नहीं करते कि हम कितना अधिक असत्य बोलते हैं। यह अनुभव तो तब मिलता है जब मनुष्य सचमुच झूठ से घबराने लगता है और सत्य ही बोलने के लिए सदा निश्चिंत रहने लगता है। उस समय मुख से निकली अपनी एक-एक वाणी पर पूरा-पूरा निरीक्षण और विवेचन करने पर उसे पता लगता है कि वह सूक्ष्म रूप में कितने अधिक असत्य बोलता है। सच तो यह है कि हममें से जो लोग अपने को सत्य बोलने वाला समझते हैं वे भी असल में बहुत असत्य बोलते हैं। जो पूरा सत्यवादी होगा, पतंजलि, व्यास आदि ऋषि-मुनियों के कथनानुसार, उसकी वाणी में तो ऐसा तेज आ जाएगा कि वह जो कुछ कहेगा, वह सच्चा हो जाएगा। वह क्रिया और फल से समन्वित हो जाएगा। यदि वह किसी को कहेगा कि 'तू नीरोग हो जा' तो वह नीरोग हो जाएगा, अर्थात् जो कार्य हम हाथ-पैर आदि की स्थूल शक्ति से सिद्ध करते हैं वह पूरे सत्यवादी पुरुष की वाणी की शक्ति से हो जाता है, अतः वास्तव में हममें से ऊँचे-ऊँचे पुरुष भी अभी सर्वथा असत्यरहित नहीं हुए हैं।

हे सहस्त्रवीर्य! इस असत्य से तुम्हीं हमें बचाओ। हमने आत्मनिरीक्षण करते हुए सदा देखा है कि हम सदैव तुच्छ भय, लोभ, आसक्ति आदि के कारण ही, सदैव अपनी कमजोरी, निर्बलता, वीर्यहीनता के कारण ही असत्य बोलते हैं, अतः वास्तव में हममें से ऊँचे-ऊँचे पुरुष भी अभी सर्वथा असत्यरहित नहीं हुए हैं। हे सहस्त्रवीर्य! तुम हमें सदा असत्य से छुड़ाते रहो, असत्य के पाप से हमें सब ओर से मुक्त करते रहो।

-:साभार:- वैदिक विनय

वेद-स्वाध्याय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

संपादकीय

असफलता से सीखकर बढ़ें सफलता की ओर

निराश होकर नकारात्मक कदम न उठाए युवा पीढ़ी

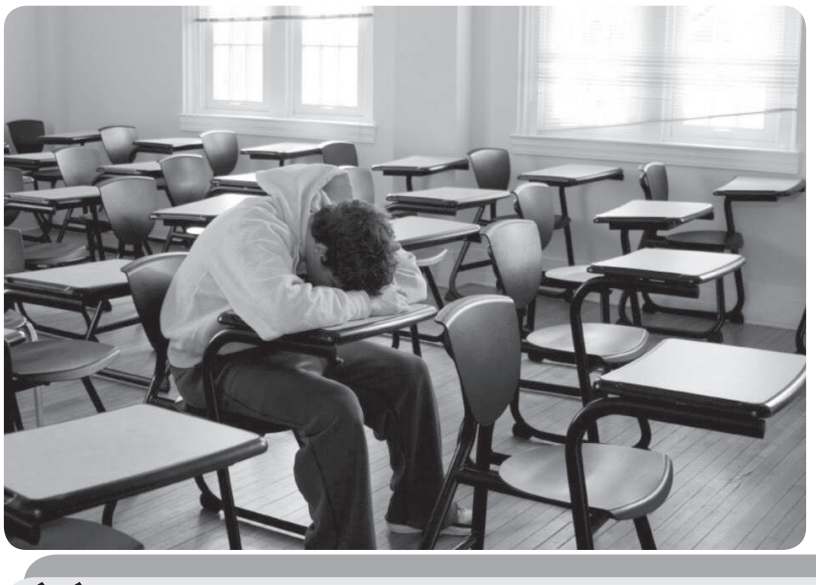

"कोटा के कोचिंग संस्थानों में तनाव ग्रस्त 25 बच्चों का आत्म हत्या करना देश और समाज की बहुत बड़ी हानि है। आर्य समाज सभी दिवंगत युवा प्रतिभाओं की आत्माओं के लिए शान्ति और सदगति की प्रार्थना कारता है और उनके परिजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता है।

किन्तु यहां पर यह भी विचारणीय है कि आजकल विद्यार्थियों के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठना, उसके लिए कोचिंग क्लास करना भी अपने आप में एक बड़ी चुनौती है। जबकि लगभग सभी कोचिंग सेंटर अपने आप में व्यापार के केंद्र बनकर रह गए हैं। उधर माता-पिता भी अपने बच्चों को तनाव ग्रस्त करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। वे हास्टल में रहकर कोचिंग करने वाले बच्चों से जब भी फोन पर बात करते हैं तो उनकी मन:स्थिति को जाने बिना ही शुरू हो जाते हैं, आपके इस बार टेस्ट में कितने नंबर आए, इतने कम क्यों आए? अब रात-दिन एक करके ज्यादा नंबर लेकर आना, यहां सब पड़ोसी और रिश्तेदारों के सामने नाक मत कटा देना, तेरे ऊपर ही सब कुछ टिका है, बाद में पूछते हैं खाना खा लिया तूने? अपना ध्यान रखना, तेरे पापा भी तेरे लिए बहुत चिंता करते हैं, अगर पापा बात कर रहे हैं तो वह कहेंगे कि तेरी मम्मी तेरे बिना बहुत परेशान रहती है। अब बच्चे के मन पर क्या गुजरती होगी? इसका हम ध्यान नहीं रखते।..."

विद्यार्थी जीवन सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण माना जाता है। क्योंकि यही वह समय होता है जब मानव जीवन की नींव परिपक्व होती है। इस अवस्था में विद्यार्थी जैसा स्वयं को ढाल लेता है, वैसा ही उसका जीवन बन जाता है। विद्यार्थियों का निर्माण राष्ट्र के भविष्य और विश्व के आशा के निर्माण की ही प्रक्रिया है। इसलिए विद्यार्थी जीवन में लक्ष्य का निर्धारण जरूर होना चाहिए। बिना लक्ष्य साधे सभी प्रयास वैसे ही होते हैं, जैसे नहाने के बाद फिर धूल में लेट जाने से हाथी का स्नान करना व्यर्थ हो जाता है। अतः हमारा पूरा प्रयास अपने लक्ष्य की तरफ होना चाहिए, अन्यथा हमारे द्वारा किया गया प्रयास निरर्थक हो सकता है।

आधुनिक परिवेश में विद्यार्थी जिस मानसिक स्थिति और परिस्थिति से गुजर रहे हैं, देखकर ऐसा लगता है कि जैसे बिना लक्ष्य की साधना के सफलता प्राप्त करना उनका उद्देश्य बन गया है और उसी का परिणाम है कि आज अनेक विद्यार्थी निराशा, उदासी, चिंता, भय और तनाव से ग्रस्त होकर अपने पथ से भटकते हुए से जा रहे हैं। विद्यार्थियों को सबसे पहले अपना लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए, फिर उस लक्ष्य को सामने रखकर सही योजना बनानी चाहिए, अपने समय और साधनों का निर्धारण करना चाहिए। इस बीच अपनी सामर्थ्य और शक्ति का भी आकलन करना जरूरी है। किंतु अपने आत्मविश्वास और मनोबल को कभी कमजोर नहीं होने देना चाहिए।

क्योंकि अक्सर कहा जाता है कि-

मन के हारे हार है,
मन के जीते जीत।

जीवन के समर में हार-जीत होना तो अवश्यंभावी है लेकिन जो हार कर भी हार नहीं मानता। जो असफलता के कारण खोजकर उन्हें पूरी शक्ति के साथ दूर करता है। और असफलता से सफलता की मंजिल की ओर नये संकल्प के साथ कदम बढ़ाता है, ऐसा संकल्प का धनी विद्यार्थी अवश्य ही एक दिन सफल जरूर होता है। इसलिए तो अक्सर कहा जाता है-

मत करना बात निराशा की,
जीवन संभल की आशा है।
कर्तव्य कर्म करते जाओ यही,
जीवन की परिभाषा है॥

किसी भी हालत में अपने मन मस्तिष्क का संतुलन बनाए रखकर कर्तव्य और कर्म के प्रति निष्ठावान बने रहना ही सच्चे और अच्छे विद्यार्थी का प्रमाण है। विद्यार्थियों को यह अवश्य समझना चाहिए कि कोई भी टापर विद्यार्थी आसमान से नहीं टपकता, वह भी हमारे जैसा साधारण ही होता है, उसको असाधारण बनाता है उसका समय का सदुपयोग, उसको महान बनाता है उसका संकल्प, उसकी आशा और विश्वास, उसकी लक्ष्य के प्रति निष्ठा और निरंतर किया गया अभ्यास ही उसे टापर बनाते हैं। लेकिन जो विद्यार्थी किसी भी कारण से असफल हो जाते हैं या प्रतियोगी परीक्षाओं में कम अंक प्राप्त करते हैं, उन्हें भी ज्यादा निराश नहीं होना चाहिए, बल्कि स्वयं पर और सबके पिता परमात्मा पर विश्वास रखना चाहिए। सफलता का अगर एक दरवाजा बंद होता है तो भगवान सैकड़ों अन्य दरवाजे खोल देता है।

इसलिए आलस्य और प्रमाद को छोड़कर लगातार का अभ्यास व्यक्ति को अवश्य सफलता प्रदान करता है। एक क्षेत्र में नहीं तो दूसरे क्षेत्र में, दूसरे में नहीं तो तीसरे क्षेत्र में निरंतर परिश्रम और पुरुषार्थ करने वाले को सफलता निश्चित रूप से मिलती है।

यह प्रेरक वचन कहा भी जाता है-

करत करत अभ्यास के,
जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात तै,
सिल पर परत निशान॥

इसलिए प्रत्येक विद्यार्थी को अर्जुन की तरह अभ्यासी होना चाहिए। लेकिन चाहे कैसी भी विपरीत परिस्थितियों का सामना क्यों न हो जाए कभी भी किसी भी असफलता को सामने रखकर जीवन मरण का प्रश्न नहीं बनना चाहिए क्योंकि परमात्मा ने सबको बहुत कुछ सामर्थ्य दिया है लेकिन फिर भी कई बार परिस्थितियों के कारण और कई बार भूल के कारण असफलता भी हमारे हिस्से में आ ही जाती है इसलिए कभी भी निराश नहीं होना ऊदास नहीं होना।

- शेष पृष्ठ 6 पर

साप्ताहिक स्वाध्याय

पंडित इंद्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित जीवनी महर्षि दयानंद से क्रमशः साभार

विद्या के स्रोत में स्नान

क्या यह उचित था? -अष्टाध्यायी या कौमुदी के सम्बन्ध में स्वतन्त्र सम्मति रखना, दण्डी जी के लिए सर्वथा उचित था। यह उनका अधिकार था। ग्रन्थों की उपयोगिता तथा अनुपयोगिता के विषय में स्वतन्त्र सम्मति रखने का विद्वानों को पूरा अधिकार है। हम यह भी नहीं कह सकते कि उनकी सम्मति निर्मूल थी। अष्टाध्यायी की पद्धति का निर्माण पाणिनि मुनि ने किया है। सूत्रों का क्रम अष्टाध्यायी का जीवन है। यदि क्रम की उपेक्षा कर दी जाय तो सूत्र व्यर्थ हैं। अनुवृत्ति असम्भव हो जाती है, विप्रतिषेधे परं कार्यम्। बिल्कुल व्यर्थ हो जाता है और पूर्वत्राऽसिद्धम् का कुछ बल ही नहीं रहता।

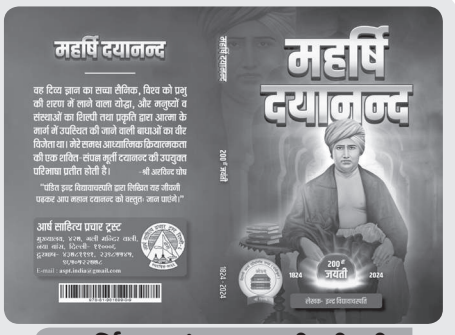

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर प्रकाशित

प्रकाशक- आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, सहप्रकाशक- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, पुस्तक प्राप्ति के लिए vedicprakashan.com ऑनलाइन प्राप्त करें अथवा 9540040339 पर संपर्क करें।

क्रमशः गतांक से आगे

धीरे-धीरे उनके हृदय में यह निश्चय सा हो गया कि जब तक कौमुदी और उससे सम्बन्ध रखने वाले ग्रन्थों का प्रचार नहीं रुक जाता, तब तक व्याकरण की ऋषि-कृत पद्धति का उद्धार नहीं हो सकता। यह विचार दण्डी जी के मन में समा गया, उनके दिल पर सवार हो गया। यही विचार दिन का चिन्तन और रात का सपना हो गया। एक बार जयपुर के राजा रामसिंह ने दण्डी जी को दरबार में बुलाकर अपने यशस्वी होने का उपाय पूछा। ऋषि-कृत ग्रन्थों के भक्त दण्डी जी ने उत्तर में यह आदेश किया कि एक बड़ी सभा करके देशभर के विद्वानों को एकत्र करो। सभी में इस विषय पर शास्त्रार्थ हो कि व्याकरण का ऋषि-कृत क्रम अच्छा है या कौमुदी का? दण्डी जी ने कहा कि मैं उस सभा में यह सिद्ध करके दिखा दूंगा कि ऋषि-कृत क्रम ठीक है और कौमुदी आदि ग्रन्थ अशुद्धियों से भरपूर हैं। दूसरे एक अवसर पर मथुरा के कलेक्टर मि० पोस्टली दण्डी जी से मिलने आए। मि० पोस्टली ने सभ्यता के तौर पर पूछा कि आप क्या चाहते हैं. जो हम कर सकें? दण्डी जी ने उत्तर दिया कि यदि आप हमारी इच्छा पूरी करना चाहते हैं तो भट्टोजिदीक्षित के सब ग्रन्थों को इकट्ठा करके जलवा दें। यह भी प्रसिद्ध है कि दण्डी जी दीक्षित के ग्रन्थों पर शिष्यों के हाथों से जूते लगवाया करते थे।

क्या यह उचित था? -अष्टाध्यायी या कौमुदी के सम्बन्ध में स्वतन्त्र सम्मति रखना, दण्डी जी के लिए सर्वथा उचित था। यह उनका अधिकार था। ग्रन्थों की उपयोगिता तथा अनुपयोगिता के विषय में स्वतन्त्र सम्मति रखने का विद्वानों को पूरा अधिकार है। हम यह भी नहीं कह सकते कि उनकी सम्मति निर्मूल थी। अष्टाध्यायी की पद्धति का निर्माण पाणिनि मुनि ने किया है। सूत्रों का क्रम अष्टाध्यायी का जीवन है। यदि क्रम की उपेक्षा कर दी जाय तो सूत्र व्यर्थ हैं। अनुवृत्ति असम्भव हो जाती है, **विप्रतिषेधे परं कार्यम्।** बिल्कुल व्यर्थ हो जाता है और **पूर्वत्राऽसिद्धम्** का कुछ बल ही नहीं रहता। अष्टाध्यायी के सूत्रों का इतना लघु-कार्य होना क्रम पर ही आश्रित है। उसका सौन्दर्य, उसका गौरव, बहुत-कुछ क्रम पर अवलम्बित है। क्रम को छोड़कर यदि सूत्रों को कार्य में लाया जाय, तो अनुवृत्ति के लिए स्मृति पर बोझ डालना पड़ता है, पर कार्य और असिद्धि का तो अनुमान मात्र ही लगाया जा सकता है। यह कहा जा सकता है कि जो आदमी संस्कृत व्याकरण का विद्वान् बनना चाहे, वह यदि सिद्धान्त कौमुदी को साद्यन्त पढ़ जाय, तो भी सूत्रक्रम से परिचित हुए बिना वह सफलता प्राप्त नहीं कर सकेगा। अष्टाध्यायी और उसके सूत्रों के क्रम का अटूट सम्बन्ध है।

-क्रमशः अगले अंक में...

स्वास्थ्य संदेश

उच्च रक्त चाप (हाई ब्लड प्रेशर) तथा इससे जुड़े रोग

क्रमशः गतांक से आगे

हाई ब्लड प्रेशर उच्च रक्तचाप
(Hypertension-High Blood Pressure)

देश और दुनिया में बहुत बड़ी संख्या में लोग जवान, बूढ़े यहां तक कि बच्चे भी हाई ब्लड प्रेशर के रोग से जूझ रहे हैं। हाई ब्लड प्रेशर में रक्तप्रवाहिकाओं के अन्दर रक्त का रक्त प्रवाहिकाओं की दीवारों पर डाला गया दबाव सामान्य से अधिक हो जाना है।

शरीर में रक्त वाहिनी धमनियों (arteries) में जो रक्त प्रवाह करता है, उसको प्रवाह की गति हृदय से प्राप्त होती है। वह दिन-रात लगातार एक अनथक पम्पिंग मशीन की भांति रक्त को पम्प करता रहता है। हृदय के दबाव से रक्त धमनियों में पहुंचता है। यह शरीर के विभिन्न भागों को शक्ति देकर पुनः हृदय के पास लौट आता है। वापिस आए रक्त को हृदय अपनी प्रणाली द्व ारा शुद्ध करके पुनः शरीर में भेजता है। यह क्रम दिन-रात चलता रहता है। रक्त पर, हृदय की पम्पिंग के दबाव को रक्तचाप (blood pressure) कहते हैं। सामान्य दबाव एक स्वाभाविक क्रिया है पर जब ये असामान्य हो जाता है तो रोग बन जाता है। जब कुछ कारणों से यह दबाव बढ़ता है तो इसे हाई ब्लड प्रेशर (High Blood Pressure) कहते हैं तथा जब दबाव कम हो जाता है तो इसे (Low Blood Pressure) कहते हैं। जब हृदय अपने पास इकट्ठे हुए रक्त को शरीर मे भेजने के लिए सिकुड़ता है तो उस समय जो अधिकतम दबाव बनता है उसे सिस्टोलिक प्रेशर (Systolic Pressure) कहते हैं। इसी समय शरीर से वापिस लौटे रक्त को ग्रहण करने के लिए जब हृदय ढीला (relax) होता है तो उस समय जो प्रेशर बनता है उसे डायस्टोलिक प्रेशर (Diastolic Pressure) कहते हैं। इन दोनों क्रियाओं के सन्तुलित दबाव को 'ब्लड प्रेशर' कहते हैं। साध ारण तौर पर बच्चों का रक्तचाप 80/50, युवकों का 120 / 70 तथा प्रौढ़ों का 140 / 90 होना सामान्य माना गया है। इनमें पहली बड़ी संख्या सिस्टोलिक प्रेशर तथा दूसरी छोटी संख्या डायस्टोलिक प्रेशर की सूचक है। ब्लड प्रेशर जानने का एक सामान्य नियम यह भी है कि व्यक्ति की आयु के सालों में 90 जमा कीजिए। योगफल का अंक ही उसका सिस्टोलिक प्रेशर होगा। अर्थात अगर एक व्यक्ति की आयु 40 वर्ष है तो उसका सिस्टोलिक प्रेशर 130 होना चाहिए।

वृद्ध व्यक्तियों का सिस्टोलिक प्रेशर 160 मिमि. तक हो सकता है। अगर सिस्टोलिक प्रेशर 170 मिमी. से अधिक तथा डायस्टोलिक प्रेशर 90 मिमी. से अधिक रहने लगे तो यह चिन्ता की बात है तथा इसका सही इलाज जरूरी है।

रक्त संचार सम्बन्धी रोगों के कारण

हाई ब्लड प्रेशर का रोग एकदम नहीं होता। यह धीरे-धीरे आता है और कई तरह की पूर्व सूचना देकर आता है।

हाई ब्लडप्रेशर के सामान्य लक्षण

सिरदर्द, सिर भारी रहना, सिर में चक्कर आना, थकान, स्वभाव चिड़चिड़ा होना, किसी काम में जी न लगना, अनिद्रा, खाया-पीया हजम न होना, बेचौनी, घबराहट, धड़कन तेज हो जाना, मुंह लाल हो जाना तथा सीढ़ियां चढ़ने पर सांस फूल जाना इत्यादि। हाई ब्लड प्रेशर का अगर समय पर इलाज न किया जाए तो हार्ट अटैक (heart attack), गुर्दों के रोग (kidney diseases), लकवा (paralysis), तथा आंखों के कई रोग हो जाते हैं।

हाई ब्लडप्रेशर कंट्रोल के उपाय

सर्वप्रथम इसका मूल कारण ढूंढा जाए तथा उसे दूर किया जाए। इसके अतिरिक्त अपने भोजन पदार्थों का ठीक चयन किया जाए। अधिक नमक, मिर्च-मसाले, अधिक चीनी, अधिक वसा तथा तली हुई वस्तुओं का सेवन, सिगरेट, काफी तथा शराब का अधिक सेवन ब्लड प्रेशर बढ़ाते हैं। लगातार मानसिक चिंता, शोक, भय, क्रोध, मोटापा, मधुमेह का रोग, गुर्दों द्वारा अपना कार्य भली-भांति न करने, बुढ़ापे में जिगर तथा आंतों की निष्क्रियता तथा छोटे जोड़ों के दर्द के कारण हाई ब्लड प्रेशर के रोग में वृद्धि होती है। कई बार ब्लड प्रेशर के यही मूल कारण होते हैं। कई महिलाओं द्वारा लम्बे समय तक गर्भ निरोधक गोलियां खाना भी उच्च रक्तचाप का कारण बन जाता है।

हाई ब्लड प्रेशर से छुटकारा पाने के लिए अपने डॉक्टर की सलाह अनुसार भोजन पदार्थों में परिवर्तन लेना चाहिए। अगर हो सके तो कुछ दिनों तक उपवास रखें। उपवास के दिनों में केवल ताजे फल खायें। नई खोज ने यह प्रमाणित किया है कि पोटाशियम युक्त तथा मलाई उतारा दूध, सादा दही, गाजर, आलू, टमाटर, पालक, खरबूजा, केला तथा संतरे का जूस प्रतिदिन लेने से हाई ब्लड प्रेशर सामान्य हो जाता है।

-क्रमशः अगले अंक में...

आर्य समाज का प्रचार-प्रसार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का वैदिक प्रकाशन, प्रकल्प

किसी भी संस्था या संगठन के विचार, मान्यताएं और परंपराओं के प्राण उसके साहित्य-पुस्तकों में समाए होते हैं। वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के उत्थान में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी से लेकर पंडित लेखराम, स्वामी श्रद्धानंद, लाला लाजपतराय, महात्मा हंसराज, पंडित गुरूदत्त विद्यार्थी, स्वामी दर्शनानंद, स्वामी स्वतंत्रानंद, महात्मा नारायण स्वामी, पंडित तुलसीराम, ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, गंगाप्रसाद उपाध्याय, आर्यमुनि इत्यादि हमारे महापुरुषों ने वेदज्ञान की अविरल धारा को जन-जन तक पहुंचाने के लिए कठिन परिश्रम किया और प्रचुर मात्रा में साहित्य सृजन कर पुस्तकों के रूप में उसे वितरित भी किया। इसी ज्ञान संपदा की बदौलत आज हम देश के कोने-कोने में और विश्व के 32 से अधिक देशों तक विस्तार कर पाए हैं। इस क्रम को लगातार आगे बढ़ाने की प्रेरणा देते हुए पंडित लेखराम ने कहा था कि विचारशीलता और लेखन का कार्य आर्यसमाज की ओर से निरंतर चलते रहना चाहिए। परिणाम स्वरूप आर्य समाज के सैकड़ों सुप्रसिद्ध संन्यासियों और विद्वानों ने वैदिक साहित्य कोष की निरंतर अभिवृद्धि की। इन समस्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अंतर्गत वैदिक प्रकाशन अहम भूमिका का निर्वहन कर रहा है।

वैदिक प्रकाशन का उद्देश्य

दिल्ली सभा के अंतर्गत संचालित वैदिक प्रकाशन द्वारा जो वैदिक साहित्य-पुस्तकें प्रकाशित कर विक्रय की जाती हैं, उनमें सभा का उद्देश्य आर्थिक लाभ अर्जित करना बिल्कुल नहीं है। बल्कि वैदिक ज्ञानधारा और आर्य विचारधारा का प्रचार प्रसार ही हमारा प्रमुख लक्ष्य है।

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की संक्षिप्त सूची

- सत्यार्थ प्रकाश☆ परफैक्ट, सत्यार्थ प्रकाश हार्ड, सत्यार्थ प्रकाश गिफ्ट, सत्यार्थ प्रकाश उपहार, सत्यार्थ प्रकाश उर्दु, सत्यार्थ प्रकाश ब्रेललिपि • सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी • ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका • वेद सैट(अंग्रेजी) • महर्षि दयानन्द चरित [ले.(पं.लेखराम)] • मनुस्मृति • विशुद्ध मनुस्मृति • मनु का विरोध क्यों? OPPOSITION TO MANU WHY? • व्याख्यान शतक • वैदिक विनय • पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी☆ हिन्दी • पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी अंग्रेजी • महर्षि दयानन्द लघु ग्रंथ संग्रह • आर्य विवाह एक्ट • आर्य समाज के नियम उपनियम • महर्षि दयानन्द ग्रंथ परिचय • उपनिषदों की कहानियां • युगधर्म • क्या ईश्वर अवतार शास्त्र सम्मत है? • आनन्द का मार्ग उपासना • आर्य ध्वज • भारत का एक ऋषि • श्री राम • नैतिक शिक्षा 1 से 12 तक • नैतिक शिक्षा ज्ञान, व्यवहार कुशलता • पाताञ्जल योगदर्शन • उपनिषद्-भाष्य • हिन्दू संगठन • वेदों को माने • गागर में सागर • आर्य मान्यताएं • स्वामी दयानन्द (ले.संतराम) • महर्षि दयानन्द सरस्वती जीवनी (ब्रेललिपि) • महर्षि दयानन्द शास्त्रार्थ संग्रह • श्रीहनुमच्चरितम् • सत्यार्थ प्रकाश एवं सरल व्याख्या • वैदिक सत्संग गुटका • बाल लघु सत्यार्थ प्रकाश • एक निमंत्रण • मानव कल्याण के सूत्र • अग्निहोत्री पत्रक • शगुन लिफाफे • नेम सिलप • यज्ञ अनुसंधान पत्रक

कामिक्स

- शेख चिल्ली और लाल बुझक्कड़ • भगवान को क्यों मानें • महर्षि दयानंद सरस्वती • स्वामी दयानंद☆ अंग्रेजी • स्वामी दयानंद पंजाबी • स्वामी श्रद्धानंद • महात्मा हंसराज • लालालाजपत राय • रामप्रशाद विस्मिल • सुभाषचन्द्र बोस • चंद्रशेखर आजाद • भगत सिंह • स्वमी दयानंद मिनि कामिक्स • महर्षि दयानंद के अनुयाई • प्यारा ऋषि

वैदिक प्रकाशन प्रचार स्टाल

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित वैदिक प्रचार स्टाल पर अपनी प्रकाशित पुस्तकें, वैदिक साहित्य, वेद-उपनिषद, दर्शन, रामायण, महाभारत, मनुस्मृति आदि अनेक अन्य पुस्तकें, हवनकुंड, सामग्री, यज्ञपात्र, ओम ध्वज, पीतवस्त्र, स्टीकर, दीवार घड़ी, स्मृति चन्हि आदि समस्त उपयोगी सामान एक ही स्थान पर उपलब्ध है। आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभाने वाला यह प्रचार स्टाल पूरे नियम और व्यवस्था के साथ लगातार कार्य कर रहा है।

महर्षि दयानन्द की 200वीं जयंती पर हर आयु वर्ग के लिए उपयोगी और प्रेरक उपहार

बंधुओ, महर्षि दयानन्द की 200वीं जयंती के दो वर्षीय वृहद आयोजनों की श्रखला निरंतर चल रही है, इस अवसर पर हमें महर्षि दयानन्द जी शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सत्यार्थ प्रकाश सहित उनके समस्त ग्रन्थों का प्रचार-प्रसार अवश्य करना चाहिए। इसके साथ ही आर्य जगत वैदिक पर्व, त्यौहारों, वार्षिकोत्सव आदि विविध आयोजन हर्षोल्लास से हो रहे हैं। अतः हम विचार करें कि इन पर्वों पर जो विशेष उपहार एक दूसरे को भेंट करते हैं, उनमें कुछ ऐसे उपहार भी अवश्य सम्मिलित करें जो हर आयु वर्ग के लिए उपयोगी और प्रेरक हों। इसके लिए दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य की सचित्र सूची ऊपर दी गई है, आप सभी आर्यजन अपने स्वजनों को वैदिक साहित्य भेंट करके एक नई पहल करें। -महामंत्री संपर्क सूत्रः- 9540040339, bit./VedicPrakashan

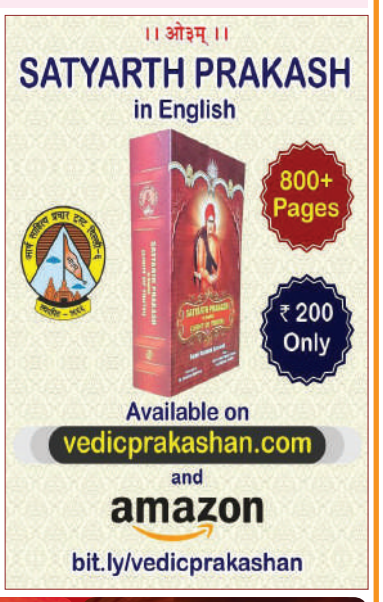

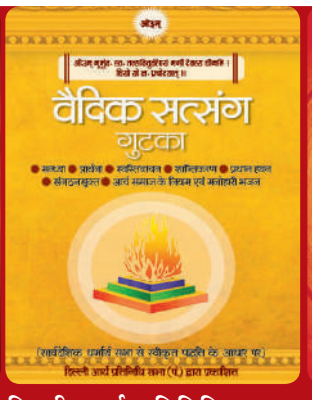

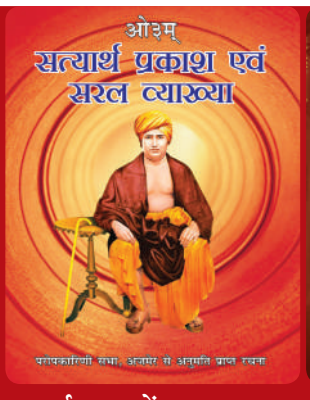

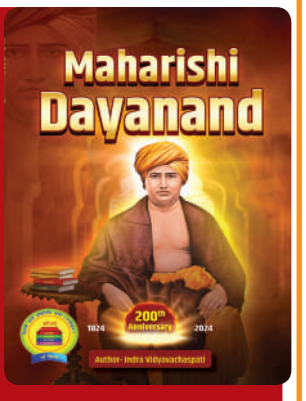

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा नई पुस्तकों का प्रकाशन

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती कविताओं की रचना करें और पुरस्कार पाएं

हे प्रख्यात योगीराज! विश्वबन्द्य दयानन्द स्वामी– कवि अखिलेश मिश्र

जो अखिलेस, है पालक, घालक
जाकी महा महिमा जग जानी।
जातैं हिमायल सैल भये स्त्रु ति,
रूप-अखण्डित, आनन्द-दानी।।
तातैं पुनीत कढ़ी सबको जो
बतावति मारग-मुक्ति, सयानी।
ईसकी प्यारी बिजै लहै सो
दयानन्द की देवधुनी-बर-बानी।।

भावार्थ– जो परमात्मा सृष्टि की उत्पत्ति, पालन और प्रलय करने वाला है, जिसकी महा महिमा को समस्त संसार जानता है, जिससे अखण्ड स्वरूप तथा आनन्ददायक वेद रूपी हिमालय पर्वत की उत्पत्ति हुई है, उससे पवित्र निकली हुई सबको मुक्ति का मार्ग बतलाने में प्रवीण, ईश्वर की प्यारी महर्षि दयानन्द की वाणीरूपी गंगा विजय को प्राप्त हो। **अलंकार–** सांगोपांग रूपक

जौन निवृत्त भयो विषयानि तैं
निर्मल-चित्त की वृत्ति है धारे।
श्री अखिलेस, के आनन्द-सिन्धु में
बूड़त चाव सों साँझ-सकारे।।
वेद-प्रभाकर की किरनैं लहि
होत प्रफुल्ल सुवास पसारे।
तौन दयानन्द को मुख-पंकज
दूरि करै भव के दुख सारे।।

भावार्थ– जो विषयों से निवृत्त होकर निर्मल चित्त की वृत्ति को धारण किए हुए है एवम् प्रातः सायंकाल परमेश्वर के आनन्द सागर में प्रसन्नता से निमग्न होता है, जो वेदरूपी सूर्य की किरणें पाकर खिलता है और चारों ओर सुगन्ध फैलाये हुए है, वह मुनिवर दयानन्द का मुखारबिन्द संसार के समस्त दुःखों का नाश करे। **अलंकार–** सम अभेद रूपक

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के अवसर पर आर्य संदेश के सभी आयु वर्ग के पाठकों से अनुरोध है कि महर्षि दयानंद जी के जीवन पर विभिन्न घटना क्रमों पर आधारित कविता की रचना करके संपादक, आर्य संदेश, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली 110001, पर भेजें अथवा Email- aryasandeshdelhi@gmail.com करें। आपकी स्तरीय कविता को आर्य संदेश साप्ताहिक में प्रकाशित किया जाएगा और विशेष अवसर पर आपको पुरुस्कृत भी किया जाएगा।

आर्यवीर/वीरांगनाओं द्वारा नुक्कड़ नाटक का मंचन

आर्य समाज कीर्ति नगर की ओर से आर्यवीर/वीरांगनाओं का उत्साहवर्धन

आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश हमेशा अपने सेवा कार्यों के लिए विख्यात है। दिल्ली में संचालित प्रतिदिन सैकड़ों शाखाओं में हजारों आर्यवीर/वीरांगनाएं शारीरिक व्यायाम और बौद्धिक शिक्षाएं प्राप्त करके जीवन निर्माण के साथ ही मानव सेवा और राष्ट्र भक्ति के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं। 5 सितंबर 2023 को सर गंगाराम अस्पताल की ओर से आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश की कीर्ति नगर शाखा द्वारा नुक्कड़ नाटक का मंचन किया गया। जिससे समाज में जागरूकता फैलाने के लिए सभी दर्शकों ने नाटक की प्रशंसा की। इसके लिए आर्य समाज कीर्ति नगर की ओर से उपप्रधान श्री सुरेंद्र आनंद जी और उनकी धर्मपत्नी एवं सचदेवा माता जी तथा अन्य महानुभावों ने आर्यवीर/वीरांगनाओं को उपहार और प्रमाण पत्र भेंट किए।

आर्य समाज प्रशांत विहार में आयोजित श्रावणी पर्व संपन्न

सारे संसार का उपकार करना है– आर्य समाज का उद्देश्य –धर्मपाल आर्य

यह सर्वविदित है कि दिल्ली की आर्य समाजों द्वारा श्रावणी पर्व के आयोजन अत्यंत उत्साह पूर्वक आयोजित किए गए। जिनमें वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं से मानव मात्र को परिचित भी कराया गया। वहीं योगीराज भगवान श्री कृष्ण का वैदिक स्वरूप और वेदों की कल्याणकारी वाणी पर आधारित प्रवचन, यज्ञ, योग, स्वाध्याय से भी मानव मात्र को जोड़ा गया।

पर्वों की इस श्रृंखला में आर्य समाज प्रशांत बिहार द्वारा आयोजित श्रावणी पर्व के सुंदर आयोजन में दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी का प्रेरक उद्बोधन उपस्थित आर्यजनों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुआ। आपने अपने विशेष संदेश में आर्यजनों को बताया कि महर्षि दयानंद सरस्वती की प्रेरणा से आर्य समाज हमेशा मानव मात्र के कल्याण और उत्थान को समर्पित रहा है। यहां जब ईसाई मिशनरी भोली-भाली जनता को झूठ बोल बोलकर अपने मत में फंसा रहे थे तब आर्य समाज के महापुरुषों ने ही उन्हें सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी थी और उनकी घर वापसी कराई थी, इस कार्य को आर्य समाज आज भी लगातार आगे बढ़ा रहा है। उन्होंने ईसाईयों के झूठ और कपट के व्यवहार से भी समाज को सावधान रहने की बात कही। प्रधान जी ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में योगीराज श्री कृष्ण के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महर्षि दयानंद ने श्री कृष्ण के विषय में जो कुछ कहा है वह अत्यंत अनुकरणीय है। आज समाज में उपेक्षित वर्ग को आर्य समाज गले लगा रहा है और संसार के उपकार करने के अभियान को तेज गति प्रदान कर रहा है। आर्य समाज प्रशांत बिहार के अधिकारियों ने प्रधान जी का स्वागत और सम्मान किया और आपको अपने बीच पाकर, आपका संदेश प्राप्त कर अत्यंत प्रसन्नता व्यक्त की तथा हृदय से आभार व्यक्त किया।

Khandav Forest

Continuing the last issue

Where there is no difference between Vedas and books, neither Hindu Turk nor Guru Chela.

Where there is no loss of life, death,

play in the immense future.

Bulla Das spoke like this in the past,

Satguru gave true words.

Marwar's Bhagat Darya Sahib has put both Hindus and Muslims in the same pan-

Said Muslim Hindu, Ghat Darshan Ranka Rao.

People's river without its name, everyone has a claim.

Dulnadas ji says in his swing-

Hindu turk dui din alam, aapni takeen mein.

This too is not enough to waver,

let me meditate on Dashrathanandan.

The same poet says about Vedas in Sattnam-

The three worlds are the Vedas.

Don't know the meaning of Chautha Lok.

Bhagatraj Dharnidas ji says-

Be a rich man with more wealth.

The one who is rich in wealth,

should be a multi-Hindu Turkish bowl.

So, we can easily get wealth and land,

only by a sight of Satguru.

No matter how good this effort of Kabir and other devotees was, but it did not succeed. The reason for the lack of success is clear. Bhagat people wanted to merge two such religions, which had two big obstacles in their meeting. The first obstacle was political. The Muslims were the victors, the Hindus were the vanquished. While on the one hand, the conqueror is not ready to make a treaty with the conqured considering the religion of the conquered as inferior, on the other hand, if the conquered caste has history and self-respect, it would never be ready to accept the conqueror's religion. It tries to handle the self-respect lost by the political defeat with fourfold stubbornness in the religious and social field. Another reason for the failure of Kabir and his companions was that they wanted to mix two religions which are fundamentally different and the basic concepts are different.

Efforts to reconcile failed. Hindu-Dharma did not try to retaliate, dug ditch for self-defense, chose wall, even started suffocating, due to lack of proper food, the structure started loosening, and got separated into parts. There is always a split in the defeated, besieged, hungry fort. There was a split even in the besieged fort of Hindu religion. As a result, innumerable sects were generated, whose large number can be estimated from the fact out of these three major sects, Vaishnavism, Shaivism and Shakt. There were the following 20 sects of Vaishnavism which used to consider each other as liars and say-

(1) Sri Sampradaya, (2) Vallabhachari, (3) Madhwachari or Brahma Sampradaya, (4) Sankadik Sampradaya or Nimavat, (5) Ramanandi or Ramavat, (6) Radha Vallabhi, (7) Nityanandi, (8) Kabirpanthi, (9) Khaki, (10) Malukdasi, (11) Dadupanthi, (12) Ramdasi, (13) Senai, (14) Mirabai, (15) Sakhi Bhav, (16 Charanadasi, (17) Harishchandri, (18) Sadhanapanthi, (19) Madhavi, (20) Vairagi and Nage Sanyasi.

There were 7 major differences among Shaivas-

(1) Sanyasi Dandi etc., (2) Yogi, (3) Jangam, (4) Urdhvabahu, (5) Guddarh, (6) Rukharh, (7) Kadalingi.

The following were the main distinctions of Shaktikas:

(1) Dakshinachari, (2) Vami, (3) Kancheliye, (4) Karari, (5) Aghori, (6) Ganapatya, (7) Saurapatya, (8) Nanakpanthi, (9) Baba Lalo, (10) Prannathi, (11) Sadh, (12) Santanami, (13) Shivnarayani, (14) Zeroist. ('Arya Darpan' June 1880 AD)

The table is quoted to show how the structure of Hinduism had deteriorated in the middle of the 19th century. The differences had increased enormously. Incest was in full swing. Inspiring power of religion, was going away.

To be continued in next issue

पृष्ठ 2 का शेष

अभिभावकों को भी यह सोचना चाहिए कि वे अपनी अपेक्षाएं बच्चों के ऊपर न थोपें, अगर कोई मां-बाप डॉक्टर, इंजीनियर नहीं बन पाए तो वे उसी रूप को अपने बच्चों में देखने लगते हैं। जिसका परिणाम यह होता है की मां-बाप की अपेक्षाओं के बोझ तले बच्चे दबकर अपने आपको बड़ा विवश और लाचार तथा मजबूर समझने लगते हैं। इसके साथ ही मां-बाप को यह भी समझना चाहिए कि आपकी प्रताड़ना कभी प्रेरणा नहीं बनती। कुछ मां-बाप अपने बच्चों को बात-बात में ताने देते हैं, तुम तो बुद्धु हो, तुम तो हमारी नाक कटाओगे, तुम तो मजदूरी करोगे, तुम तो ऐसा करोगे, वैसा करोगे ये शब्द कभी भी बच्चों के अंदर उत्साह उत्पन्न नहीं करते। बल्कि इनसे जो उनके अंदर कुंठा और निराशा आती है वह उनके कोमल मन को झकझोर कर रख देती है। आपके दो शाबाशी के बोल, प्रेरणा के दो शब्द उनको जरूर आगे बढ़ने के लिए रास्ता दिखा सकते हैं। इसलिए हमेशा अपने बच्चों को साथ में बैठकर उन्हें समझें और समझाएं। उनसे आत्मीयता पैदा करें और किसी भी स्थिति में उनको वैचारिक रूप से अकेला ना छोड़ें। मानसिक रूप से उनको संबल प्रदान करें तो वे बच्चे फालतू की समस्याओं से बचे रहते हैं।

कोटा के कोचिंग संस्थानों में तनाव ग्रस्त 25 बच्चों का आत्म हत्या करना देश और समाज की बहुत बड़ी हानि है। आर्य समाज सभी दिवंगत युवा प्रतिभाओं की आत्माओं के लिए शान्ति और सदगति की प्रार्थना कारता है और उनके परिजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता है।

किन्तु यहां पर यह भी विचारणीय है कि आजकल विद्यार्थियों के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठना, उसके लिए कोचिंग क्लास करना भी अपने आप में एक बड़ी चुनौती है। जबकि लगभग सभी कोचिंग सेंटर अपने आप में व्यापार के केंद्र बनकर रह गए हैं। उधर माता-पिता भी अपने बच्चों को तनाव ग्रस्त करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। वे अपने हास्टल में रहकर कोचिंग करने वाले बच्चों से जब भी फोन पर बात करते हैं तो उनकी मनोस्थिति को जाने बिना ही शुरू हो जाते हैं, आपके इस बार टेस्ट में कितने नंबर आए, इतने कम क्यों आए? अब रात-दिन एक करके ज्यादा नंबर लेकर आना, यहां सब पड़ोसी और रिश्तेदारों के सामने नाक मत कटा देना, तेरे ऊपर ही सब कुछ टिका है, बाद में पूछते हैं खाना खा लिया तूने? अपना ध्यान रखना, तेरे पापा भी तेरे लिए बहुत चिंता करते हैं, अगर पापा बात कर रहे हैं तो वह कहेंगे कि तेरी मम्मी तेरे बिना बहुत परेशान रहती है। अब बच्चे के मन पर क्या गुजरती होगी? इसका हम ध्यान नहीं रखते।

दूसरी तरफ कोचिंग संस्थान तो पूरी तरह प्रोफेशनल होते ही हैं। राजस्थान के कोटा शहर में संचालित कोचिंग सेंटर तो एक उद्योग का रूप धारण कर चुके हैं। जहां पर गांव, शहर, कस्बों से अनेक विद्यार्थी इंजीनियर और मेडिकल में प्रवेश लेने के लिए लगातार पहुंचते हैं। कोटा में कोचिंग की ऐसी आपाधापी है कि वहां हर व्यक्ति अपने बच्चों को भेज कर उनका भाग्य विधाता बनना चाहता है। यहां कुछ कोचिंग संस्थानों ने पूरी तरह से व्यापार का रूप धारण कर लिया है। प्रत्येक कोचिंग संस्थान का यही उद्देश्य है कि यहां अधिक से अधिक बच्चे प्रवेश लें ताकि वह यह दावा कर सकें की सबसे अधिक सफलता की दर उसी संस्थान की है। ऐसे में आंतरिक परीक्षाओं में जो अच्छे अंक लाएंगे, कोचिंग संस्थान का पूरा ध्यान उन्हीं पर केंद्रित रहता है, जो पीछे रह जाएंगे उनका मनोबल टूट जाता है और उसी हिसाब से वे बच्चे तनाव में ग्रसित होते जाते हैं।

कोई भी विद्यार्थी जब अपने गांव से या शहर से कोचिंग के लिए जाता है तो उसके दिमाग में यह स्पष्ट रहता है कि अगर वह सफल नहीं हुआ तो माता-पिता की आर्थिक स्थिति पर क्या असर पड़ेगा? समाज में उनकी प्रतिष्ठा पर कितनी चोट लगेगी? किस तरह से माता-पिता अपना पेट काट कर तुम्हारे लिए फीस का इंतजाम कर रहे हैं और इसी कारण बच्चे अपने आप को असफल होने पर गुनहगार मानते हैं और फिर गलत रास्तों पर चल पड़ते हैं।

वर्ष 2023-24 में कोटा में करीब 2 लाख 5 हजार विद्यार्थी कोचिंग के लिए आए। उनके लिए 3000 छात्रावास और 25000 कमरे तैयार थे। राष्ट्रीय स्तर पर 2022-23 में 27 लाख बच्चे इंजीनियर और मेडिकल प्रवेश परीक्षा में बैठे। इसके लिए केवल 64610 स्थान थे। कोटा आए प्रतिभागियों की सफलता के आधिकारिक आंकड़े तो उपलब्ध नहीं लेकिन सामान्यत: माना जाता है की सफलता की दर 10 से 14% के बीच ही होती है। वहां कोचिंग संस्थानों में जिस प्रकार की पढ़ाई कराई जाती है उससे किसी भी युवा के जीवन में तनाव ही रहेगा, बच्चों पर वहां के अत्यंत तनावपूर्ण परिवेश का नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। कोटा में इस वर्ष अभी तक 25 बच्चे आत्महत्या कर चुके हैं और यह ऐसा पहली बार नहीं हो रहा है, इस शिक्षा के व्यापार पर सरकार और प्रशासन ध्यान देकर भारत के भविष्य युवा पीठी की रक्षा और उज्ज्वल भविष्य के लिए कदम उठाए और अभिभावक भी बच्चों के प्रति अपने व्यवहार पर अवश्य विचार करें।

-संपादक

ब्रेल लिपि में
महर्षि दयानन्द जीवनी
मात्र 1000/-रु
ब्रेल लिपि में
सत्यार्थ प्रकाश
मात्र 2000/-रु
अपने क्षेत्र के नेत्रहीनों/अंध विद्यालयों को अपने आर्यसमाज की ओर से भेंट करें।

पृष्ठ 1 का शेष

दिया जाता था, उनको घोड़ी पर बैठकर बारात निकालने की मनाही थी, वे लोग अपना मुंह छिपाकर और गर्दन नीची करके दूर होकर निकलते थे, उनकी परछाई पड़ने से भी लोग अपने आपको अपवित्र मानते थे। ऐसी विषम परिस्थिति में विवश होकर लोग हिंदू धर्म को छोड़कर मुस्लिम और ईसाई बनते गए और हमारे धर्मवीर, कर्मवीर, महान वीर भाई हमसे बिछड़ते चले गए। और इस तरह ये जातिवाद, छुआछूत और भेदभावपूर्ण व्यवहार की खाई बड़ी होती गई। इस अस्पृश्यता और भेदभाव के विषैले दमघोंटू वातावरण से देश की इतनी बड़ी हानि हुई जिसका कि कोई ठिकाना नहीं है। किंतु जैसे-

हर युग की एक आस होती है,
हर युग की एक प्यास होती है।
हर युग में एक मसीहा आता है,
जो मानवजाति की रक्षा करता है॥

महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने जातिवाद, छुआछूत और भेदभाव की दीवार को तर्क, युक्ति और प्रमाण के प्रहार से तोड़ा, वैदिक आधार पर सब मनुष्य एक ईश्वर की संतान हैं, का उद्घोष किया। सबका एक ही वैदिक धर्म है का संदेश दिया, कोई ऊंचा और नीचा नहीं, गुण, कर्म स्वभाव के अनुसार चार वर्ण और चार आश्रम की व्यवस्था से मानव समाज को परिचित कराया। सबको जीवन जीने की आदर्श कला सिखाई। मानव मात्र के कल्याण हेतु आर्य समाज की स्थापना की और महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रेरणा से आर्य समाज लगातार जातिवाद और ऊंच-नीच, भेदभाव के खिलाफ कार्य करता आ रहा है। हमारे महापुरुषों ने इसके लिए अभियान चलाए, तथाकथित निम्न समझे जाने वाले समाज के लिए पानी के कुएं खुदवाए, उनके बच्चों के विवाह पर उन्हें घोड़ी पर बिठाया, जो लोग मजबूरी में मुस्लिम और ईसाई बन गए थे उनकी घर वापसी कराई। सबको यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा, साधना से जोड़कर अपने साथ, अपने पास बैठाया और उन्हें गले से लगाया। वह महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा स्थापित आर्य समाज ही है जिसने जातिवाद की दीवार को तोड़कर अंतर्जातीय विवाह का कानून बनवाया। लड़के लड़की के विवाह की आयु 18 और 21 निर्धारित करवाई। पूरे समाज के बिगड़े हुए ढांचे को सही मार्ग दिखाकर आधुनिक भारत के नव निर्माण में अहम भूमिका निभाई और लगातार अपना श्रेष्ठ योगदान दे रहा है। लेकिन बिहार राज्य सरकार द्वारा ये जातिवाद की संपोषक जातिगत जनगणना का आर्य समाज घोर विरोध और निंदा करता है। यह किसी भी तरह से भारत राष्ट्र को कमजोर करने की स्वार्थ पूर्ण सोच की चिंगारी है। इसके लिए हम केंद्र सरकार, बिहार राज्य सरकार और न्यायालय से भी मांग करता है कि इस जातिवाद के संपोषक कुचक्र को यहीं पर रोका जाए। क्योंकि यह मानव विरोधी और राष्ट्र विरोधी संकल्पना है जो किसी भी तरह से स्वीकार्य नहीं है।

ज्ञात हो कि 2 अक्टूबर 2023 को बिहार राज्य की ओर से जातिगत गणना की सूची घोषित करके एक नये शिरे से जातिवाद को हवा देने का कार्य किया गया है। हालांकि जातिगत जनगणना के प्रयास आज के नहीं हैं बल्कि अंग्रेजों की हुकूमत के समय जातिगत जनगणना 1931 में हुई थी। 1941 में भी जाति जनगणना हुई, लेकिन दोनों बार आंकड़े प्रकाशित नहीं हुए थे। इसके बाद अगली जनगणना से पहले देश आजाद हो गया था, लेकिन जानकारी के अनुसार उस समय भारत में जातिगत गणना में 4000 से कुछ ज्यादा जातियां अंकित हुई थी। आजादी के बाद 1951 में सिर्फ अनुसूचित जातियों और जनजातियों को ही गिना गया। संविधान लागू होने के साथ ही में एससी-एसटी के लिए आरक्षण शुरू हो गया था। इसके बाद 1978 में मोरारजी देसाई की जनता पार्टी सरकार ने बीपी मंडल की अध्यक्षता में एक पिछड़ा वर्ग आयोग बनाया, दिसंबर 1980 में मंडल आयोग ने अपनी रिपोर्ट दी, तब तक जनता पार्टी की सरकार जा चुकी थी, मंडल आयोग ने 1931 की जनगणना के आधार पर ही ज्यादा पिछड़ी जातियों की पहचान की, कुल आबादी में 52 फीसदी हिस्सेदारी पिछड़े वर्ग की मानी गई, आयोग ने पिछड़े वर्ग को सरकारी नौकरियों और शिक्षण संस्थानों में 27 प्रतिशत आरक्षण देने की सिफारिश की। मंडल आयोग की रिपोर्ट पर 9 साल तक कुछ नहीं हुआ, 1990 में वी.पी. सिंह की सरकार ने मंडल आयोग की एक सिफारिश को लागू कर दिया। ये सिफारिश अन्य पिछड़ा वर्ग के उम्मीदवारों को सरकारी नौकरियों में सभी स्तर पर 27 फीसदी आरक्षण देने की थी। तब आरक्षण के खिलाफ खूब बवाल हुआ था। देशभर में प्रदर्शन हुए थे। मामला कोर्ट में भी गया था। सुप्रीम कोर्ट ने भी आरक्षण को सही माना लेकिन अधिकतम लिमिट 50 फीसदी तय कर दी गई थी।

इसके बाद 2006 में केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री अर्जुन सिंह ने मंडल पार्ट-2 शुरू किया, इस बार मंडल आयोग की एक दूसरी सिफारिश को लागू किया गया, जिसमें सरकारी नौकरियों की तरह सरकारी शिक्षण संस्थानों जैसे यूनिवर्सिटी, आईआईटी, आईआईएम, मेडिकल कॉलेज में भी पिछड़े वर्गों को आरक्षण दिया जाए, इस बार भी बवाल हुआ लेकिन सरकार अड़ी रही और ये लागू भी हुआ।

2010 में आकर फिर जाति आधारित जनगणना की मांग उठाई गई, जिसमें लालू यादव, शरद यादव, मुलायम सिंह यादव और गोपीनाथ मुंडे जैसे ओबीसी नेताओं ने जोर शोर से ये मांग उठाई। लेकिन तब सत्तारूढ़ यूपीए में कांग्रेस भी आनाकानी कर रही थी, मार्च 2011 में उस वक्त के गृह मंत्री पी. चिदंबरम ने लोकसभा में कहा था कि 'जनगणना में जाति का प्रावधान लाने से ये प्रक्रिया जटिल हो सकती है। और जो लोग जनगणना का काम करते हैं, खासतौर पर प्राइमरी स्कूल शिक्षक उनके पास इस तरह के जातिगत जनगणना कराने का अनुभव या ट्रेनिंग भी नहीं है।'

हालांकि यूपीए सहयोगियों के दबाव के बाद मनमोहन सरकार को जाति जनगणना पर विचार करना पड़ा था, 2011 में प्रणब मुखर्जी की अगुवाई में एक कमेटी बनाई गई, जिसमें जाति जनगणना के पक्ष में सुझाव दिया, इस जनगणना को नाम दिया गया- सोशियो-इकनॉमिक एंड कास्ट सेन्सस। 4800 करोड़ रुपये खर्च कर सरकार ने जनगणना कराई। जिले वाइज पिछड़ी जातियों को गिना गया, जातीय जनगणना का डेटा सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय को दिया गया, लेकिन करोड़ों रुपये खर्च करने के बाद भी केंद्र सरकार आज तक ये आंकड़ा जारी नहीं कर पाई है। इस जातिगत जनगणना में भारत में 46,00,000 लाख जातियों की गिनती बताई जाती है।

जबकि जुलाई 2021 में संसद के भीतर मौजूदा सरकार से जातीय जनगणना पर सवाल पूछा गया था। वह सवाल यह था कि 2021 की जनगणना जातियों के हिसाब से होगी या नहीं? नहीं होगी तो क्यों नहीं होगी? सरकार का लिखित जवाब आया कि सिर्फ एससी, एसटी को ही गिना जाएगा। अर्थात ओबीसी जातियों को गिनने का कोई प्लान नहीं है, कहने का मतलब यह है कि केंद्र की सत्ता में जब यूपीए गठबंधन की सरकार थी तब वह इस जातिगत जनगणना की सूची को दबाए बैठी थी, लेकिन अब सारा विपक्ष जातिवाद की गणना को मुद्दा बनाने पर तुला है।

बिहार राज्य सरकार द्वारा घोषित जातिगत जनगणना सूची के अनुसार वहां अत्यंत पिछड़े वर्ग की आबादी है- 4 करोड़ 70 लाख 80 हजार यानी 36 प्रतिशत, अनुसूचित जाति यानी दलित समुदाय की आबादी है- 2 करोड़ 56 लाख 89 हजार यानी 19.65 प्रतिशत, अनुसूचित जनजाति यानी आदिवासी आबादी है- 21 लाख 99 हजार यानी 1.68 प्रतिशत, एक कैटगरी है अनारक्षितों की, जो तथाकथित अगड़ी जाति माने जाते हैं, उनकी आबादी है- 2 करोड़ 2 लाख 91 हजार यानी 15.52 फीसदी पहले ये बताते हैं कि जातिगत सर्वे की ये पूरी प्रक्रिया कैसे पूरी हुई। जातिगत जनगणना पर जो आंकड़े आए हैं, उसकी शुरुआत करीब साढ़े चार साल पहले सर्वे में बिहार में कुल परिवारों की संख्या दो करोड़ 83 लाख 44 हजार थी, राज्य में यादव 14 फीसदी, भूमिहार 2.86 फीसदी, राजपूत 3.45 फीसदी, ब्राह्मण 3.66 फीसदी, कुर्मी 2.87 फीसदी, मुसहर 3 फीसदी, तेली 2.81 फीसदी, मल्लाह 2.60 फीसदी हैं। अगर इन सारे प्रयासों पर विचार किया जाए तो जातिगत जनगणना समाज में वैमनस्य फैलाएगी और लोग एक दूसरे से घृणा करेंगे। **-संपादक**

आवश्यकता

आर्य समाज वेद मन्दिर सी.पी. ब्लाक पीतम पुरा दिल्ली-110034 के चौरिटेबल आयुर्वेदिक औषधालय के संचालन के लिए एक सुयोग्य तथा अनुभवी महिला अथवा पुरुष वैद्य की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार। इच्छुक व्यक्ति अपने बायोडेटा, शिक्षा तथा अनुभव की विस्तृत जानकारी के साथ इस विज्ञापन के प्रकाशन के 15 दिनों के अन्दर प्रधान जी के नाम से वेद मंदिर के पते पर आवेदन करें। **-सोहन लाल आर्य, मन्त्री**

वानप्रस्थी महानुभाव अपना विवरण भेजें

हमारे सभी आदरणीय आर्य समाजी महानुभावों के मन में वैदिक धर्म के अनुसार आश्रम व्यवस्था के प्रति अटूट निष्ठा प्रशंसनीय है। जीवन के तीसरे वानप्रस्थ आश्रम के लोग आर्य समाज की सेवा में तन-मन-धन से संलग्न हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा उन समस्त महानुभावों से अनुरोध करती है जिन्होंने चाहे वानप्रस्थ दीक्षा ली हो या न भी ली हो किन्तु अगर उनके मन में आर्य समाज के प्रचार और सेवा कार्यों में रुचि है और वे महानुभाव महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और वेद के प्रचार-प्रसार को आगे बढ़कर गति प्रदान करने लिए संकल्पित हैं। कृपया वे सभी सज्जनवृन्द अपना नाम, फोन नं., पता, योग्यता और अनुभव लिखकर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा- 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001'** के पते पर रजिस्र्ड डाक से भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल अथवा 9650183339 पर व्हाट्सएप्प करें। - ***महामन्त्री***

शोक समाचार

श्री श्योदान सिंह जी का निधन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री सुखबीर सिंह आर्य जी के पूज्य पिता श्री श्योदान सिंह जी का 03 अक्टूबर 2023 को अकस्मात निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार 04 अक्टूबर को काली बस्ती, श्मशान घाट, हस्तसाल गांव (उत्तम नगर टर्मिनल के पीछे) में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

श्रीमती संतोष कुमारी जी का निधन

आर्यवीर दल दिल्ली प्रेदश के उपमंत्री श्री राजेश आर्य जी पूज्या माता श्रीमती संतोष कुमारी जी का 01 अक्टूबर 2023 को अकस्मात निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी श्रद्धांजलि सभा 03 अक्टूबर 2023 को संपन्न हुई। जिसमें आर्यवीर दल और आर्य समाजों के अधिकारियों ने श्रद्धांजलि दी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त व परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -संपादक

सोमवार 02 अक्टूबर, 2023 से रविवार 08 अक्टूबर, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं0 डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 04-05-06 अक्टूबर, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 04 अक्टूबर, 2023

माननीय प्रधानमंत्री को उपहार में दिए गए बहुमूल्य स्मृति चिह्नों को अपना बनाने का सुनहरा अवसर
बेशकीमती स्मृति चिह्नों के लिए बोली लगाएं
पीएम मेमेंटो ई-ऑक्शन
02 - 31 अक्तूबर, 2023

प्रदर्शनी देखें
स्थान : राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, जयपुर हाउस, नई दिल्ली
प्रदर्शनी का समय : सुबह 11 बजे से शाम 06 बजे तक
भागीदारी के लिए
pmmementos.gov.in पर पंजीकरण करें | क्यूआर कोड स्कैन करें
आपको मिल रहा है कुछ अलग करने का एक मौका
नीलामी से प्राप्त धनराशि का उपयोग 'नमामि गंगे' परियोजना में किया जाएगा
CBC 09101/13/0021/2324

प्रतिष्ठा में,

JioTV Jio TV+
आर्य समाज का एक मात्र टीवी चैनल
आर्य सन्देश टीवी
Arya Sandesh TV
अब जियो टीवी नेटवर्क पर भी
Jio Set Top Box और JIO मोबाइल App पर उपलब्ध

देश और समाज विभाजन के षड़यन्त्र का पर्दाफास
आओ! जानें मनुस्मृति का सच
स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण
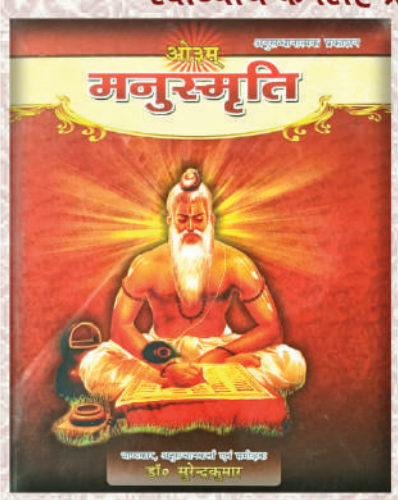

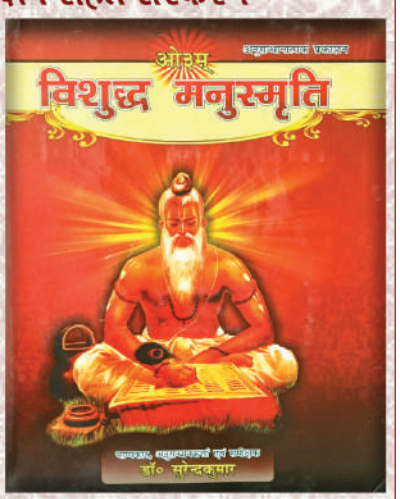

मूल्य : ~~600~~/- 500/-
मूल्य : ~~400~~/- 300/-
मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।
प्रकाशकः- आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427 मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड,
नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

JBM Group
Our milestones are touchstones

TECHNOLOGY DRIVING VALUE
TOWARDS CREATING A
CLEANER | GREENER | SAFER
TOMORROW.
JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● संपादकः धर्मपाल आर्य ● सह संपादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह